सैनिक क्षत्रिय कौन हैं ?

[WHO ARE THE SAINIK KSHATRIYAS ?]

— जिसमें —

सैनिक क्षत्रियों की उत्पति, इतिहास और दर्जा का संक्षिप्त वर्णन है और साथ ही परिशिष्ट में राजपूत जाति की खांपों (वंशों) तथा उनके राजपूत राज्यों की खोज पूर्ण नामावली भी है

❀

लेखक

श्री बख्तसिंहजी शेखावत बी. ए.,

निराधना (शेखावाटी) राजस्थान

❀

प्रकाशक :

राजस्थान क्षत्रिय महासभा

राजपूत सभा भवन, भगवानदास रोड

प्रधान कार्यालय, जयपुर
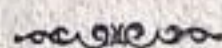
प्रथम संस्करण— जनवरी सन् १६५२ ई०

91

निवेदन

इस पुस्तक के लेखक श्री बचनसिंहजी शेखावत बी० ए० निराधना (शेखावाटी) से राजपूताने का क्षत्रिय समाज अपरिचित नहीं है। उनके सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। आपने राजपूत जाति की अमूल्य सेवाएं की हैं और कर रहे हैं। आप राजस्थान क्षत्रिय (राजपूत) महासभा के जन्म काल (ई० सन् १९१६ अजमेर) से ही उसके उत्साही कार्यकर्ता व जनरल सेक्रेटरी (प्रधान मंत्री) कई वर्ष तक रहे हैं। इस समय भी आप महासभा के एक स्तम्भ हैं। आपका त्याग व तपस्या प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। महान् राजपूत जाति को संगठित करने में आपकी विशेष रुचि है। कालान्तर से विभाजित क्षत्रिय समाज के भिन्न-भिन्न अंगों का वास्तविक ऐतिहासिक खोज को प्रकाश में लाने का श्रेय आपको ही है। "सैनिक क्षत्रिय" जाति का परिचय जो आपने प्रस्तुत लेख में दिया है वह अद्वितीय है। आपके अकाट्य प्रमाण-युक्त लेख को पढने के पश्चात् कोई संशय बाकी नहीं रहता कि यह जाति राजपूतों का ही एक अंङ्ग है और कालान्तर से जो सामाजिक भेदभाव पड़ गया है वह अब मिटा दिया जवे।

यह लेख राजस्थान के लोकप्रिय व महासभा के मुख-पत्र साप्ताहिक "प्रकाश" जयपुर के दीपावली विशेषांक (३० अक्टूबर १९५१ ई०) तथा ५ नवम्बर व १२ नवम्बर १९५१ ई० के तीन अङ्कों में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। लेकिन इसकी मांग विशेष होने से अब यह अलग पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है।

जयपुर
२४ जनवरी १९५२ ई०

भरतसिंह
सेक्रेटरी, राजस्थान क्षत्रिय महासभा

राजपूताना
राजनैतिक
पाकिस्तान
पंजाब
भटिण्डा
हिसार
प्रान्त
दिल्ली
रिवाड़ी
भावलपुर
बीकानेर
हनुमानगढ़
सूरतगढ़
नोहर
सिवानी
राजासर
सरदारशहर
रतनगढ़
सुजानगढ़
रामगढ़
पलाना
नागोर
फलोदी
जोधपुर
मोहनगढ़
जैसलमेर
शिओरी
अलवर
मथुरा
भारत
धौलपुर
करौली
जयपुर
अजमेर
सांभर झील
ब्यावर
भीलवाड़ा
माधोपुर
बूँदी
कोटा
बारां
लूणी
बाड़मेर
जालोर
सिरोही
आबू
पालनपुर
उदयपुर
प्रतापगढ़
नीमच
बाँसवाड़ा
डूँगरपुर
टोंक
कच्छ की खाड़ी
कच्छ
मध्य
करांची से
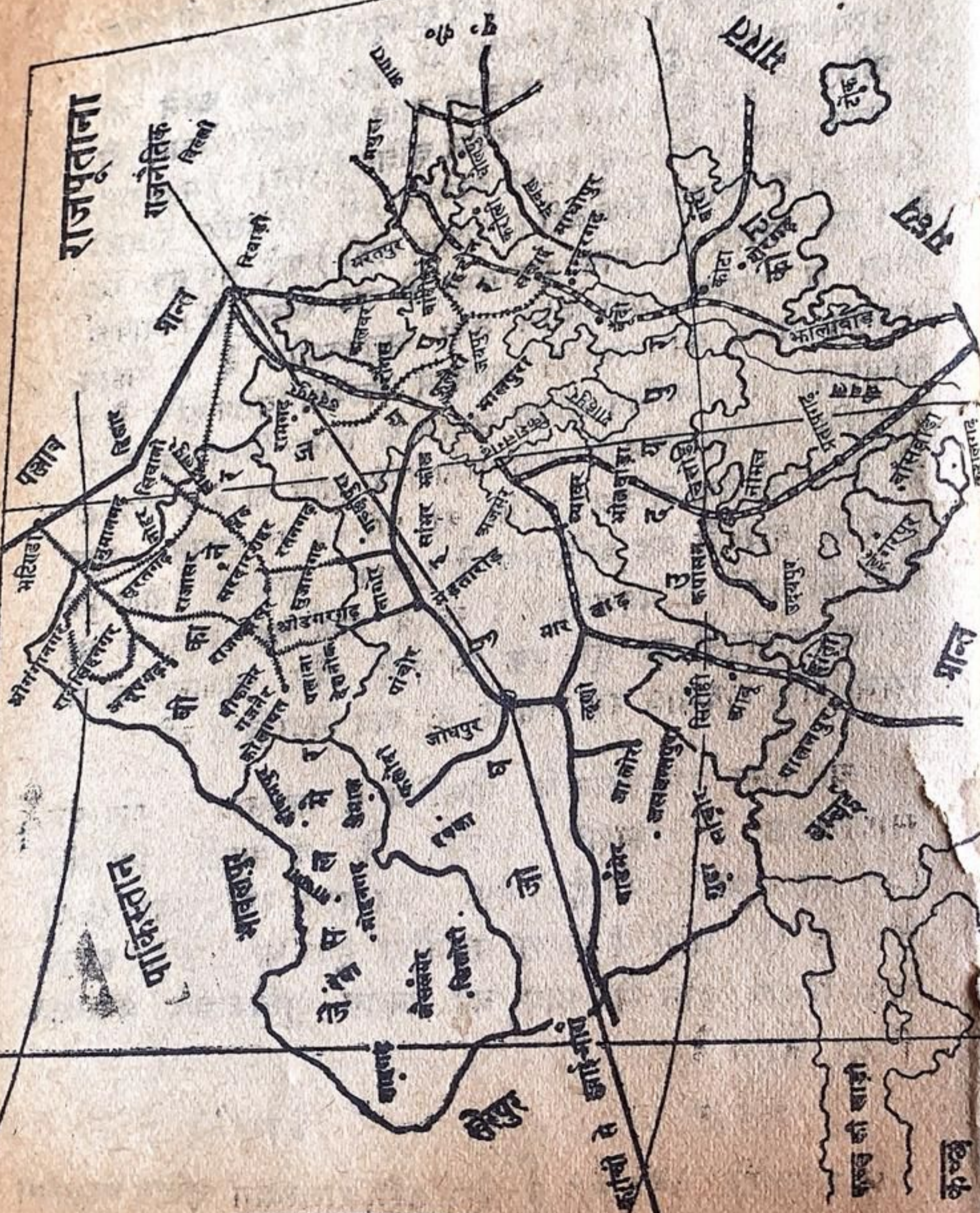
सैनिक क्षत्रिय कौन हैं ?

WHO ARE THE SAINIK-KSHATRIYAS ?

(उनकी उत्पत्ति और दर्जा)

THEIR ORIGIN AND STATUS

[लेखक श्री ठा० बचनसिंहजी शेखावत बी० ए० निराधना]

यह कृषक जाति, जो मारवाड़ राज्य में अधिकतर खेती बाड़ी का धंधा करती है और जिसकी जन संख्या मर्दुमशुमारी सन् १९४१ ई० के अनुसार ६५,००० से अधिक है। वह आजकल भिन्नभिन्न नामों से पुकारी जाती है, जैसे "राजपूतमाली" "सैनिक राजपूत" या "सैनिक क्षत्रिय"। इस जाति की उत्पत्ति और परम्परागत इतिहास के विषय में इस समय पर्दा पड़ा हुआ है, जिसका कारण है उसका खेती-बाड़ी

का पेशा। चूंकि खेती-बाड़ी का धन्धा अन्य बहुत सी हिन्दू जातियों के लोग और मुसलमान तक भी करते हैं, इसलिए इस जाति का मौजूदा नाम भ्रम उत्पन्न करने वाला है। उससे इस जाति की वास्तविक परम्परा, इतिहास और उत्पत्ति का सच्चा ज्ञान नहीं होता। किसी व्यवसाय, अजीविका धन्धे से किसी व्यक्ति की जाति का निश्चय नहीं होता। हम देखते हैं कि भिन्न भिन्न जातियों के लोग एक ही प्रकार का धन्धा करते हैं जैसे-बागबानी। बागबानी तो वास्तव में एक व्यवसाय है, न कि जाति। वर्तमान समय में जब कि विविध शक्तियां लग रही है और उनका लक्ष्य यह है कि जातियों और उपजातियों में जो अनेकता और भेदभाव पाए जाते हैं उनको समाप्त किया जावे। और जब को इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि उन सब जातियां और समुदायों को संगठित किया जाय जो एक सी समानता रखती है। तब यह स्वाभाविक बात है कि "सैनिक-राजपूत" भी इस विषय पर जोर देवें कि उनका उद्गम क्षत्रिय है और फिरसे सुप्रसिद्ध और महान् राजपूत जातिके निकट सम्पर्क में आवें ताकि संगठित जनसंख्या से बल और उत्कर्ष बढ़े। इस विषय में बहुत कुछ उपयोगी और सामयिक काम हाथ में लिया गया है और उसमें दुरदर्शिता और बुद्धिमता पूर्वक श्रीगणेश किया गया है। हाल ही में एक उदाहरण देखने में आया है जिससे अजमेर-मेरवाड़ा के रावत (मेर) राजपूतों को राजपूत जाति में पुनः मिलाने का उद्योग किया है।

जोधपुर के श्री दरबार हिजहाईनेस महाराजा साहब बहादुर ने ता० ३० अक्टूबर १९४७ को रावत राजपूत कानफ्रेन्स जो सेन्दड़ा (मारवाड़) में हुई थी, उस अवसर पर इस प्रकार की घोषणा की थी :—

"दूसरा मेरात आदि भाई जो कदई राजपूत हा, अगर राजपूत बणवारो विचार करेला तो मैं उण विचार रो स्वागत करूंला।"

(देखो मारवाड़ राजपूत महासभा का मुख्य "क्षत्रिय वीर" साप्ताहिक पत्र जोधपुर ता० ३-११-१९४७ ई० भाग १ अंक १३)

सैनिक जाति किस प्रकार जुदा जाति बनी ?

(क) जोधपुर राज्य की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई० भाग २ सफा ४० (अङ्ग्रेजी संस्करण) पर लिखा है कि :—

Jodhpur State (Marwar) Census Report 1891 A. D. Vol. II (Castes of Marwar illustrated) English Edition· Page 40 states that :—

"Some Rajputs, so the local tradition says, were put in confinement by Shahbudin Ghori and were set to liberty through the medium of the Emperor's (Hindu) gardener named Boba on their adopting his profession. Thus they became "Rajput-Malis" and there are found sub-

castes among them just like those of Rajputs Viz, Chauhan, Solanki, Bhati, Tunwar etc."

अर्थात् "कुछ राजपूतों को शाहबुद्दीन गौरी ने कैद कर लिया और बादशाह के बड़े बागवान ने जिसका नाम बोवाजो था, बीच बचाव करके छुड़ा दिया, जबकि उन्होने बागवानी का पेशा अख्तियार कर लिया। इस प्रकार वे माली बन गए और उनमें राजपूतों के मुताबिक गोत्र (खांपे) पाए जाते हैं जैसे चौहान, सोलंकी, भाटी, तंवर आदि।"

(ख) पंजाब गजेटीयर (जिला हिसार) सन् १८६२ई० पृष्ठ १३२ में लिखा है कि :—

Punjab Gazetteer, (Hisar District) 1892 A.D. Page 132 says that --

"...The traditional origin of Mali is follows. *They were originally Kshatriyas.* In order to escape the wrath of Parasram, while he was slaughtering the *Kshatriyas*, their ancestors in common with other *Rajputs* abandoned their social rank and took to various callings."

अर्थात् माली जाति की उत्पत्ति जन श्रुति के अनुसार यह है कि वे लोग शुरू में क्षत्रिय (राजपूत) थे। परशुराम क्षत्रियों का नाश

कर रहा था, उस समय उसके क्रोध से बचने के लिए इनके पूर्वजों ने अन्य राजपूतों के साथ अपना सामाजिक दर्जा त्याग दिया और भिन्न भिन्न व्यवसायों में लग गये।"

(ग) इनके सिवाय एक और तरीका जो बुद्धि ग्राह्य भी प्रतीत होता है। वह है राजपूतों में शनै शनै भूमि का बंटवारा और उसके कारण उनका किसानी धंधे में आना। राजपूतों में से कुछ लोगों ने सिर्फ बागवानी का धंधा अपनाया और आगे कालान्तर में वही समुदाय एक जुदा जाति में परिणत हो गया। हिन्दू शास्त्रों की आज्ञा है कि क्षत्रिय लोग अपने सैनिक कार्यों के सिवाय (विपत्ति काल में) कृषि व्यवसाय कर सकते हैं। जैसा कि महर्षि मनु का प्रमाण है:—

वैश्य वृत्याणि जीवस्तु ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपिवा ॥

अर्थात ब्राह्मण व क्षत्रिय (विपत्ति काल में) वैश्य वृति से जीविका करे। (देखो मनु स्मृति अध्याय १० श्लोक ८२) जीविका के १० काम बताए हैं। जैसे:—

विद्या शिल्पं भृति सेवा गो रक्षा विपिनं कृषिः
धृति भैक्ष कुसीदं च दश जीवन हेतवः

अर्थात विद्या, कारीगरी, नौकरी, दुकानदारी, खेती, पशुपालन, ब्याज लेना, संतोष, सेवा व भिक्षा (देखो मनु० अ० १०

श्लोक ११६) इन जीविकाओं में भिक्षा सबसे अन्तिम है। इसके सिवाय ऐसा ही आपत काल में राजपूत की जीविका के लिए गोतम स्मृति अध्याय १० के दूसरे परपाट में भी यह श्लोक है:—

यथोक्तान कृषि वाणिज्यें चास्वयं कृते कुसीदं च राज्ञः

अर्थात क्षत्रिय के विशेष कार्य प्रजापालन के सिवाय खेती बाडी व शिल्पकारी बताए हैं।

राजपूत अपना खास काम राज करना समझते हैं। मगर राज़ करने वाले राजपूत (क्षत्रिय) बहुत थोड़े हैं। बाकी सब खेती करते हैं। राजपूताने में जो राजपूतों (क्षत्रियों) का खास मुल्क समझा जाता है खेती बाडी करने वालों की तादाद मारवाड (जोधपुर) राज्य में फी सदी ८५ है। उधर व्यवहार में भी हम देखते हैं कि राजपूतों में अधिकांश खेती बाड़ी से जीवन निर्वाह करते हैं। परन्तु केवल धंधे या पेशे के बदलने से ही गोत्र (खांप-अल्ल-वंश-नुख-पोठभेद और अटक) खानदानी रीति रिवाज और रस्मों में कोई फर्क नहीं पड़ा। क्योंकि चालू गोत्र व राजवीर्य की शुद्धता आदि से ही जातियों की वंश परम्परागत सच्ची स्थिति मालूम होती हैं। इसके सिवाय यह बात भी स्पष्ट है कि क्षत्रियों (राजपूतों) में दो प्रकार के समुदाय होते हैं। एक तो वे लोग जो युद्ध सेवा में रणक्षेत्र में जाते हैं और दूसरे वे जो 'रिजरविस्ट' कहलाते हैं और रक्षित फौज में भर्ती होते हैं तथा वक्त जरुरत साथ देते हैं। सैनिक क्षत्रिय जाति के लोग दूसरे दर्जे में गिने जा सकते हैं।

(घ) जोधपुर राज्य की मनुष्य गणना रिपोर्ट सन् १८६१ ई० (विक्रमी संवत् १६४८) हिन्दी संस्करण जो आज से ६० वर्ष पहले बड़ी भारी खोज पडताल व जांच के साथ राज्य के बड़े बड़े मुत्सद्दी, विद्वान, इतिहासवेता और वयोवृद्धों की कमेटी द्वारा सशोधित तथा श्री हिज हाईनेस महाराजा साहव बहादुर के स्वीकृत पास करने पर लाख से अधिक रुपये के व्यय से अद्वितीय तैयार हुई थी उस महान ग्रंथ के पृष्ठ ८१ पर इस प्रकार का वर्णन मिलता है :—

"महूर माली जोधपुर में बहुत ही कम हैं बल्कि गिनती के हैं जो कभी किसी वक्त में पूरब की तरफ से आये थे। बाकी सब उन लोगों की औलाद हैं जो राजूपत से माली हुए थे और इनकी १२ जातें (वंश-खांप) कछवाहा, पड़िहार, सोलंकी, पंवार, गहलोत, सांखला, तंवर, चौहान, भाटी, राठौड़, देवड़ा और दहिया हैं।"

इसी सरकारी रिपोर्ट में हर एक कौम (जाति) को उसकी कौमियत से ही लिखा गया था परंतु इस महत्वपूर्ण प्रमाणिक ग्रंथ के पृष्ट ८३ में भी इसजाति को "राजपूत माली" लिखा है, "राजपूत माली" शीर्षक के अन्तर्गत यह लिखा है:—

"राजपूत माली"

"ये मारवाड़ में बहुत ज्यादा हैं। इनके बड़ेरे शहाबुद्दीन, कुतुबुद्दीन, गयासुद्दीन और अल्लाउद्दीन वगैरह दिल्ली के बादशाहों से लड़ाई हार कर जान बचाने के वास्ते राजपूत

से माली हुए थे। माली होना पृथ्वीराज चौहान का राज्य नष्ट होने के पीछे शुरू हुआ था, यानी जब कि संवत् १२४६ (ई० सन् ११६२) में पृथ्वीराज चौहान और उनकी फौज के जंगी राजपूत शहाबुद्दीन गोरी से लड़कर काम आ गये; और दिल्ली अजमेर का राज्य छूट गया तो उनके बेटे पोते जो तुर्कों के लश्कर में पकड़े गये वे अपना धर्म छोड़ने के सिवाय और किसी तरह अपना बचाव न देखकर मुसलमान हो गये जो गोरी पठान कहलाते हैं। उस वक्त कुछ राजपूतों को बादशाह के एक माली ने माली बतला कर अपनी सिफारिश से छुड़ा लिया। बाकी पकड़े और भ्रष्ट किये जाने के भय से हथियार बांधना छोड़कर इधर उधर भागते और दूसरी कौमों में छुपते रहे। उस हालत में जिसको जिस कौम में पनाह मिली वह उसी कौम में रहकर उसका पेशा करने लगे। ऐसे होते होते बहुत से राजपत माली हो गये।"

आगे चलकर जोधपुर राज्य ने फिर लिखा है कि--"कुतुबुद्दीन बादशाह ने जबकि वह अजमेर की तरफ आया था संवत् १२५६ के करीब अजमेर और नागोर के जिलों में बसने और खेती करने का हुक्म दिया।

जोधपुर राज्य की इस मनुष्य गणना रिपोर्ट सन् १८६१ ई० के पृष्ठ ८६ पर एक फहरिस्त उन "मौरिसआला" (मूल पुरुष) लोगों की है जो पहले पहल राजपूत से माली हुए थे:—

नं०	खांप	नख उपशाखा	नाम मोरिसआला जो राजपूत से माली का धंदा किया	नाम उसके बाप का
१-	चौहान	अजमेरा	कुसमा	रावत भालणसी
३४-	टांक	दग्धी	पूनो	रावत माणक
४२-	गहलोत	कुचेश	ईसर	आल्हाराव
४३-	गहलोत	पीपाड़ा	जालणसी	रावत जैसिंहदे
४४-	कछवाहा	कछवाहा	धांधू	रावत रेवा
४५-	भाटी	सिंधड़ासिध-मुल्तान के	बरहू	बरहपाल
४६-	भाटी	जैसलमेरा	कंवरसी	रावत पदमसी
५१-	सोलंकी	लासेचा	तिहूण	रावत सिथल
५३-	पड़िहार	मंडोवरा	खींवसी	भादर रावत
५४-	तंवर	खंडेला	चाचक	राजा अंबरिख
५८-	पंवार	धोकरिया	उल्हो	राणा मलिया
६०-	दहिया	दहिया	कुसलो	भगवान

वास्तव में यह मुसलान बादशाहों की एक चतुर नीति का नतीजा था कि उन्होने राजपूतों को खेती–बाड़ी आदि धन्दों में बिखेर कर निहत्था कर दिया और इस तरह लड़ाई की एक प्रबल जड़ को नष्ट कर दिया और राजपूतों को शान्तिमय काम धन्दो में जैसे बागवानी और खेतीबाड़ी आदि में लगाया या उन्हें

मुसलमान बना डाला। जातियां और उपजातियां बनाना एक राजनैतिक उपाय या तरीका था जिससे क्षत्रियों का संगठन तोड़ा गया। यह तरीका कोई नया नहीं है। यह नीति हाल ही में द्वितीय विश्वव्यापी युरोपीय महायुद्ध (जून १९४५ ई०) के विजेताओं ने अपने प्रधान सेनापति जनरल मेकआर्थर के द्वारा जर्मन और जापानियों का सैनिक बल और जोश दबाने को भी जापान व जर्मनी में बरती थी अर्थात् उन्हें निशस्त्र कर खेती-बाड़ी में लगाया था।

यह निर्विवाद सिद्ध है कि "सैनिक क्षत्रिय" विशुद्ध राजपूत हैं—इसके प्रमाण

१. सैनिक राजपूतों में वही वंश खांपें (चालू गोत Clans) हैं जो राजपूतों में हैं। सभी गोत्र वही हैं। एक भी अपवाद नहीं है। यानी इनमें एक भी खांप ऐसी नहीं है जो राजपूतों में नहीं पायी जाती हो। इनमें एक भी ऐसी खांप नहीं है जो किसी भी दूसरे वर्ण या दूसरी जाति से सम्बन्ध रखती हो।

२. इनके रिवाज, रीति-रसमें, सदाचार, व्यवहार, शारीरिक सङ्गठन और आकृति राजपूतों से घनिष्ठता से मिलती हैं। और अपनी खांप बचा कर विवाह करते हैं।

३. क्षत्रिय वंश की परम्परा जो इनमें पाई जाती है वह इस जाति में विविध घरानों और गोत्रों के बहीभाटों (बड़वा-राव, ब्रह्मभट्ट) द्वारा कदीम से कायम हैं।

४. इनके कुछ हकूक ऐसे चले आते हैं जिनसे मालूम होता है कि इस जाति को एक खास रुतबा या दर्जा आज तक हांसिल है। मिसाल के तौर पर मंडोर (जोधपुर) में राठौड राजघराने के शमशान हैं, वहीं पर इस जाति के अन्त्येष्ठी के अधिकार अब तक हैं। मंडोर में ईशर निकालने का हक इनको है जो मारवाड़ में सिवाय राजपूत जागीरदारों के दूसरे किसी व्यक्ति या जाति को नहीं है। इनके बेरे (कुए), काश्त की जमीन और ढाणी (छोटे झोंपड़े) इनके अपने अपने गोत्रों के नाम से विख्यात हैं जैसे पड़िहारों की ढाणी, गहलोतों का बेरा, कछवाहों की बस्ती, टाकों का वास आदि। ये इनके पेशेवर नामोंसे नहीं कहलाते हैं।

५. परम्परा से इनकी सेवाएं राजपूती ढङ्ग की रही हैं। मिसाल क तौर पर मंडोर के हेमाजी गहलोत ने जो बालेसर के ईन्दा पडिहारों का प्रधान (दीवान) था। मंडोर प्राप्त करने में राव चूंडाजी राठौड को सहायता की थी। मंडोर के चतुराजी गहलोत महाराजा श्री जसवन्तसिंहजी प्रथम (सं०१६६५-१७३५ वि०) की निजी सेना में थे और दरबार के साथ काबुल की मुहीम में गये थे। इन चतुराजी का देहान्त जमरूद (पेशावर) में श्रावण सुदि ४ विक्रम सम्वत् १७३३ को हुआ था। महाराजा साहब का इन पर इतना प्रेम था

कि उन्होंने इनकी यादगार में काबुल से लेकर मंडोर तक बारह-बारह कोस की दूरी पर चबूतरे बनवाने का हुक्म दिया। (देखो 'मारवाड़ की जातियों की उत्पत्ति का इतिहास'

प्रधान हेमाजी गहलोत, मंडोर

जिल्द ३, पृष्ठ ६० जो जोधपुर स्टेट द्वारा सन् १८९५ ई० में छपा।) अखाजी गहलोत जोधपुर नरेश महाराजा अभय-सिंहजी (सम्वत् १७८१ – १८०५ वि०) के मर्जीदान-मुसाहिब थे। यही सब कुछ नही है, इस जाति का इतिहास

ही नहीं बल्कि मारवाड़ का इतिहास भी बिना गोरांधाय के उल्लेख के अपूर्ण है। गोरांदेवी रतनाजी टाक की पुत्री थी। यह वही मंडोर की अमर वीरांगना थी जिसने बादशाह

बादशाह ओरंगजेब के फ़ौलादी पंजे से बचा कर जोधपुर के बाल नरेश महाराजा अजीतसिंह को गोरां धाय सपेरे सुकनदास खीची (चौहान) को सोंप रही है

औरङ्गजेब के क्रूर हाथों से जोधपुर के बालक महाराजा अजीतसिंह को बचाने की साजिस में मुख्य था। इसकी अनुपम और स्वामी भक्ति पूर्ण सेवाएं प्रशंसनीय है। इसी कारण से औरङ्गजेब, बालक महाराजा अजीतसिंह को न पकड़ सका और मारवाड़ (जोधपुर राज्य) को मुगल साम्राज्य में मिलाने का उसका स्वप्न सफल न हुआ। झाराबरदार लाखा, चैना, गोविन्द पडिहार, श्री महाराजा मानसिंहजी (वि० सं० १८६० – १९००) के निजी सेवक-मर्जीदान थे। इन्होंने जालोर के घेरे में अच्छी सेवा की। इसलिए दरबार ने परगना नागौर का गांव सुखवासी वि० सं० १८९६ में और पूंदला गांव परगना जोधपुर में इनायत किये। कुछ भोम जमीनें भी जैतारण में मिली। प्रथम विश्व-व्यापी यूरोपीय महायुद्ध में चतुरसिंह कछवाहा और धूड़सिंह ने सरदार रसाला में और सुबेदार और दफेदार पद पर अच्छी सेवा की।

मारवाड़ राज्य की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई० हिन्दी संस्करण के पृष्ठ ९० पर यह वृत्तान्त मिलता है :—

"एक गहलोत राव बीकाजी राठौड़ के साथ (आसोज सुदि १० सं० १५२२ वि० को) मंडोर से काला गोरा भैरूं देवताओं की मूर्ति लेकर गया था। उसके वंशज बीकानेर में रहते हैं। हिजहाईनेस महाराजा डूंगरसिंहजी (बीकानेर नरेश) ने उनमें से एक को धायभाई बनाया और सोना बख्शीश किया।"

गोरांधाय का नाम अमर हो गया है। क्योंकि वह मारवाड के "राष्ट्रीय गीत (धूंसे)" में इस प्रकार गाया जाता है :—

मुकन जैदेव गोरां जसधारी ।
धन दुरगो राखियो अजमाल ॥

इस राष्ट्रगान के नीचे फुटनोट में गोरांधाय के विषय में यह वृतान्त लिखा गया है :—

"भंगन का स्वांग भर दिल्ली के शाही पहरे में से बालक महाराजा अजीतसिंह को टोकरी में लाकर सपेरे मुकन्ददास खींची को सौंपने वाली मंडोर की धाय टाक गोरां। इसकी बनाई बावड़ी (वापी) जोधपुर शहर में पोकरण हवेली से सटी हुई "गोरंधा" (गौरां धाय) बावडी है। इसकी छतरी कचहरी रोड पर है, जहां वह वीरांगना सं० १७६१ ज्येष्ठ बदि ११ गुरुवार को अपने पति गुहिलोत धाओ मनोहर गोपी भलावत (सैनिक क्षत्रिय) के साथ सती हुई।"

(देखो जोधपुर गवर्नमेंट गजट जिल्द ८२ नं० ७१ तारीख २७ जुलाई सन् १९४७ ई० पृष्ठ १,८९२., "क्षत्रिय वीर" (मारवाड राजपूत सभा का मुख्य पत्र) जिल्द १ अङ्क १० ता० ६ अक्टूबर १९४७ ई० पृष्ठ २, कालम २, लाइन २६ और "मारवाड का राष्ट्रीय गीत" जो जोधपुर स्टेट द्वारा सन् १९३३ ई० में छपा, पृष्ठ १ – ३)

जोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित "जोधपुर राज्य का राष्ट्रीय गीत" नामक पुस्तक (तृतीय आवृत्ति सन् १९४७) के पृष्ठ १० (अंग्रेजी संस्करण) में सैनिक क्षत्रिय वीरांगना श्रीमती गोरां-धाय के अपूर्व आत्म-त्याग व साहस का उल्लेख इस प्रकार किया गया है :—

Mukan Jaidev Goran jashdhari
dhin Durgo rakhiyo Ajmal, Dhoonso bajere, 8

(8)

Brave Mukand, Goran were,
All praise be to Durgadas great.
Who all reared young Ajit in their care.
And saved him from danger's threat.

8. Glorious as well are Mukanb Das, Jaideo and Goran. Praised be Durgadas of heroic fame, who brought up Maharaja Ajit Singh in the time of disaster.

(F. N. 11.) To escape the wrath of Emperor Aurangzeb, Goran the Dhai (foster-mother) of infant Prince Maharaja Ajit Singh replaced the infanf by her own child and took him away on

Monday the 14th July 1679 in the garb of a sweep ress, hidden, in a basket full of rubbish which could not catch the eye of the imperial guard at Delhi. He was later handed over to Mukanddas Khichi, a co-worker of hers who too succeeded in bringing him to a place of safety, being disguised as a snake-charmer. She belonged to the Sainik-Kshatriya community of Mandor. (Vide National Anthem of Jodhpur State, Third Edition, November 1947, Page 10 Published by Authority.

इसी जोधपुर राष्ट्रीय गीत पुस्तक के हिन्दी संस्करण (तृतीयावृत्ति सन् १६४७ ई०) के पृष्ठ १७ (फुटनोट ५) में गोरांधाय का उल्लेख इन शब्दों में है :—

"टांक गोरांधाय ने भंगन का स्वांग भर दिल्ली के शाही पहरे में से बालक महाराजा अजीतसिंह राठौड़ को कूड़े कचरे की टोकरी में लेकर सपेरे मुकन्ददास खींची को सौंपा था। इसने प्रसन्नतापूर्वक अपने बालक को अजीतसिंह की जगह सुला दिया ताकि बादशाह औरङ्गजेब बालक महाराजा अजीतसिंह को मारने की इच्छा करे तो उसका लड़का ही मरे। युद्ध के पश्चात् बादशाह उस बच्चे को ले गया और अपनी पुत्री

जेबुन्निसा बेगम की देखरेख में मुसलमानी ढङ्ग पर पाला पोसा। यह बनावटी राजकुमार (मोहम्मदी राज) फिर १० वर्ष की

गोरा धाय का देवल (छत्री) जोधपुर

(मंडोर के चौधरी स्वर्गीय ठाकुर शेरजी हिम्मताजी गहलोत मय अपने ज्येष्ठ पुत्र किशोरसिंह के सन् १९२६ ई०)

आयु में दक्षिण के युद्ध के समय प्लेग से बीजापुर में मरा। यह धाय (फोस्टर मदर) मन्डोर की सैनिक क्षत्रिय जाति के धाभो मनोहर गोपाल भलावत (गुहिलोत) की स्त्री थी। इसकी बनवाई बावड़ी (वापी) जोधपुर शहर में पोकरण हवेली से सटी हुई 'गोरंधा' (गोरांधाय) बावडी है और इसकी छः खम्भों की स्मारक छतरी पब्लिक पार्क (पब्लिक बाग) पास कचहरी रोड पर है।"

झारावरदार लखाजी, चेनाजी, गोविन्द पडिहार श्री दरबार महाराजा मानसिंहजी जोधपुर नरेश के निजी कर्मचारी थे और जालोर के घेरे के समय इन्होंने जो सैनिक सेवा दरबारकी की थी उसके एवज में प्रसन्न होकर महाराजा ने विक्रम संवत १८६६ में गांव सुखवासी परगना नागोर रेख आमदनी १०००) सालाना का और गांव पूंदला परगना जोधपुर जागीर में दिया था। इसके अलावा दरबार ने उसको परगने जेतारण में भी कुछ बेरे (कुए) जमीन आदि भोम में इनायत किये थे। इनका इन्द्राज रेकार्ड सरकारी दफ्तर (दफ्तर श्री हजूर वगैरह) में है। चीन की लडाई (सन् १६०० ई० में) और यूरोप की प्रथम लडाई (सन् १६१४–१८ ई०) में रिसालदार चतुरसिंह और धूडसिंह कछवाहा जोधपुर निवासी ने रिसालदार और दफेदार सरदार रिसाला (जोधपुर लेन्सरस) के ओहदों पर काम किया था। यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि शुद्ध राजपूत (Pure Rajputs)

ही जोधपुर स्टेट रसाले (घुड़सवार सेना) में भरती हो सकते हैं (देखो मारवाड की कौमों का इतिहास और उनकी रीत रस्म का जरूरी हाल-रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ सन् १८६१ ई० तीसरा हिस्सा पृष्ठ ५५६)।

सैनिक क्षत्रियों की स्त्रियों को राज परिवार में शिशुओं के लिए धाय रखने का रिवाज भी परम्परा से चला आता है। यह रिवाजी हक बीकानेर और उदयपुर (मेवाड़) की स्टेटों में प्रचलित है। उदयपुर मेवाड के धायभाई ठाकुर अमरसिंहजी तंवर ए. डी. सी. टू. हिज हाइनेस महाराणा साहब और सुपरिन्टेनडेन्ट शिकारखाना व जन्तुशाला Zoo को विरधोलिया नाम का गांव (मेवाड़ में) और बेरासर नाम का गांव बीकानेर राज्य में इनायत हुआ था। इस जागीर के साथ ही उनको डबल ताजीम और डबल सोना भी दिया गया था। धाभाई ठाकुर अमरसिंहजी २७ जुलाई १६४७ ई० को परलोकवासी हुए परन्तु उनकी-जागीर और रुतबे का सिलसिला उनके लड़के धाभाई ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी तंवर बी. ए.; एल. एल. बी. मेजिस्ट्रेट उदयपुर स्टेट को कायम है। राव बदनमल तंवर जो धाभाई ठाकुर अमरसिंहजी के दादा थे वो हिजाहाईनेस महाराणा श्री शम्भुसिंहजी के गार्जियन (संरक्षक) थे और उनकी वीरतापूर्ण और स्वामी-भक्ति की सेवाओं के बदले में उनको वि० सं० १६२८ कार्तिक बदि ८ को दोनों पावों में सोना आदि व २० हजार वार्षिक आय की जागीर दी गई थी। महाराणा ने उन्हें "राव" की पदवी भी

इनयत की थी। ये बड़े प्रभावशाली और कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने पथिकों के आराम के लिये रास्ते ठीक कराये और वावड़ी कुए भी बनावाये। महाराणा शंभुसिंहजी ने स्वयं मय कुल राज-परिवार के जिसमें जनाना सरदार भी थे और मय परिजन के राव बदनमल की हवेली पधार कर और पांच दिवस निवास कर उत्सव में भाग ले शोभा बढ़ाई थी और एक अनुपम सम्मान बक्शा था। यह बात कार्तिक बदि ३ विक्रम संवत १९२८ (३१ अक्टूबर १८७१ ई०) की है। चैत्र बदि ११ विक्रम संवत १९३२ (१० मार्च १८७६ ई०) को हिजहाईनेस महाराणा सज्जनसिंहजी ने राव बदनमल को इजलास खास (प्रिवी स्टेट कौंसिल) का मेम्बर भी बनाया। (देखो "वीर विनोद" नामक वृहद इतिहास भाग ४ पृष्ठ २,११२ व २,१५८ जो उदयपुर मेवाड़ राज्य द्वारा सन् १८८४ ईस्वी में छपा और महामहोपाध्याय रायबहादुर डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा डी० लिट्० कृत उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २ पृष्ट २४१-४२)। बीकानेर के महाराज लल-सिंहजी के पुत्र कुंवर डूंगरसिंह को वि० सं० १९२८ की सावण सुदि ७ (ई० सन् १८७२ ता० ११ अगस्त) को बीकानेर की राजगद्दी पर गोद बिठाने में धाओ राव बदनमल का पूरा हाथ था। जैसा कि महाराज लालसिंहजी के खास रूक्के बैसाख सुदि द्वितीय ८ आदि (लिखी महाराज श्री लालसिंघजी धाऊजी श्री बदनमलजी म्हरों जवार वंचसी अपरंच ········) से तथा सहीवाला

अर्जुनसिंह भटनागर (मिनिस्टर उदयपुर) के जीवन चरित पृष्ठ २१ से प्रकट होता है। राव बदनजी के पुत्र कर्नल रघुलाल (रघुवीरलाल) वि० सं० १९३२ फाल्गुण तक मेवाड़ राज्य के चारों रसाले व शंम्भू पल्टन के कमान्डर (सेनापति) रहे। धाभाई उदयसिंहजी गहलोत बीकानेर को भी ताजीम थी और वे बीकानेर स्टेट में सोनानवीस जागीरदार थे। जोधपुर के हिज हाइनेस महाराजा सर सरदारसिंहजो की धाय भी गहलोत वंस की सैनिक-राजपूत महिला थी। उसका नाम था धाय हस्तीबाई गहलोत धर्मपत्नी धायभाई राधाकिशन सांखला, (थलियों का बास जोधपुर)।

धाय का काम केवल नर्स व बच्चे पालने का ही नहीं था जैसा अब माना जाता है। धाय अपने स्तन से राजकुमारों को दूध पिलाया करती थी। इसलिए ऐसी इजाजत देने के पहले इस बात का खास विचार रखा जाता था कि धाय का खून विशुद्ध क्षत्रिय हो और उसी प्रकार की समानता रखता हो। इस जाति के लोगों की सुन्दर आकृति, पुष्ट शारारिक संगठन, मिलता हुआ रक्त, अच्छा दूध, शुद्ध सदाचार और व्यवहार होने से धाभाइयों को आदर की दृष्टि से देखा जाता रहा। इस परम्परा का आधार इस विश्वास पर है कि माता के दूध का विशेष प्रभाव क्षत्रिय चरित्र के संगठन पर पड़ता है। इन सैनिक क्षत्रिय धाभाइयों का विशुद्ध क्षत्रिय दूध है इसमें कोई शक नहीं है। यह एक प्रकट

प्रमाण है और मान्य सत्य है। उदयपुर व बीकानेर के राजघरानों में तो धायभाई का रुतवा है ही परन्तु राजस्थान के अन्य सरदारों और उमरावों में भी ये धायभाई आदर से देखे जाते हैं।

मारवाड़ राज्य की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८६१ ई० (हिन्दी संस्करण भाग ३ पृष्ट ६१ में यह भी लिखा है कि—

"अलबता एक बात मंडोर के राजपूतमालियों के विषय में वर्णन करने योगय है। जब बादशाह शेरशाह शूरी ने जोधपुर राज्य को (वि० सं० १६०० ई० सन् १५४३ में) जीत लिया और राव मालदेव राठोड़ छप्पन के पहाडों में (परगना सिवाना मारवाड़) चले गये थे तब बादशाह शेरशाह की मृत्यु के दो वर्ष बाद में मंडोर के मालियों ने पठाणों की फौजी चौकियां हटा दी और रावजी को इस बात की खबर दी जिस पर रावजी जोधपुर वापिस लौटे और उन्होंने दुबारा कब्जा किया।"

जोधपुर स्टेट की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट (मारवाड़ राज्य की जातियों के सचित्र वृतांत) सन् १८६१ ई० पृष्ठ ८० पर यह लिखा है :—

"गहलोत हेमा जो बालेसर के ईन्दों (पड़िहारों) का प्रधान (दीवान) था, राव चूंडाजी राठोड़ को मंडोर (जोधपुर) का राज दिलाने कि कोशिश में शामिल था। उसको रावजी ने मंडोर में दखल हो जाने पर अपने इकार के माफिक जो पोष बदि १०

विक्रम सम्वत १४४६ (ता० १०-११-१३६२ ईस्वी रविवार) को थाना सालोडी में किया गया था मंडोर के पास बहुत सी जमीन माफी में दी" ।

भिन्न २ मर्दुमशुमारी की रिर्पोटों से इस बात की पुष्टी होती है कि इस जाति की उत्पत्ति राजपूत जाति से है । उदाहरण के लिए जोधपुर राज्य की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८६१ (मारवाड़ राज्य की जातियों का सचित्र वृत्तांत के जिल्द २ पृष्ट ४० पर 'राजपूत माली' नाम के शीर्षक के निचे इस प्रकार लिखा है:—

"ये लोग राजपूतों से अपनी उत्पत्ति मानते हैं" यही बात जोधपुर राज्य की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८६१ (हिन्दी संस्करण) के पृष्ट ८० तथा भारत मनुष्यगणना रिपोर्ट सन् १६०१ ई० जिल्द २५ (अंग्रेजी) पृष्ट १५६ (केप्टेन ए० डी० बेनरमेन आई० सी० एस० राजपूताना) पर दुहराई गई है ;—

Census Report of India 1901 A. D. Vol. XXV (Rajputana) part 1 (Report) by Capt. A.D. Bannerman 1. C. S., Superintendent of Census Operations, Rajputana (Brief account of certain castes and Tribes) Page 156 :—

"..........In Marwar (Jodhpur State) there is a local tradition that *some Rajputs* who were imprisoned by Shahbuddin Ghori 'were

released through the good offices of one of the Eardeners of the Empreor by name Baba, on their promising to adopt the profession of gardening. They did so and their sub-divisions retain the names of the *Rajput Clans to which theybelong.*"

राजपूताने की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १६२१ ई० भाग १, अध्याय २, पृष्ठ २१८ में यह लिखा है कि :—

Rajpuatna Census Report 1921 A. D. Part 1 Chapter II. Caste, Tribe, Race or Nati onality Group II. Cultivators, (in clu-ding growers of special products). Page 218.

"............Malis, second in numberical strength are mostly found in Jaipur, Marwar, Kotah, Alwar, Mewer, Bharatpur, Bundi and Ajmer-Merwara. *They claim their origin from Rajputs* and asserts that gardening was their main occupation; that the root of the word Mali is "Mal" meaning "Cultivation" and that *their septs correspond with those of Rajputs............*"

"ये लोग राजपूतों से अपनी उत्पत्ति बताते हैं और कहते हैं कि खेती बाडी उनका खास पेशा है। माली शब्द माल धातु से बना है जिसका अर्थ है खेती करना। इनके गोत्र (खांप-वंश) वही हैं जो राजपूतों के हैं।"

पंजाब गजेटीयर (जिला हिंसार) सन् १८६२ के पृष्ठ १३२ पर लिखा है :—

Gazetteer of Hissar District (Punjab) by F. J. Fagan Esq. Settlement Officer, 1892 A. D., Published by Punjab Government in 1893, Chapter III. The people Page 132 :—

"They smoke and eat with Jats and Rajputs *They* WERE ORINALLY KSHATRIYA".

"इनका हुक्का पानी, खाना-पीना जाट और राजपूतों के साथ होता है। ये लोग पहले क्षत्रिय थे।"

"संयुक प्रान्त की जातियां और उपजातियां" नाम की सरकारी पुस्तक जिसे विलियम क्रूक साहब सी० आई० ई०, आई० सी० एस० ने सन् १८६६ (सम्वत् १६५२ वि०) में लिखा था उसके भाग ४, पृष्ठ २५६ पर लिखा है कि :—

In the "Castes and Tribes of N. W. P. (United Province) by Mr. William Crooke

C. I. E., I. C. S. Vol. IV 1896 A. D. page 256 (Published by Government of India, Calcutta) it is said :—

"Saini (correct Sainik)is a gardening and cultivating tribe. The man of this tribe not seldom takes service and especially in the CAVALRY AND CLAIM RAJPUT ORIGIN."

"सैनी (सैनिक) जाति खेती-बाडी करने वाली कृषि कौम है। इस जाति के लोग अक्सर नोकर पेशा होते हैं और खास कर घुड़सवारों में। ये लोग राजपूत जाति से अपनी उत्पत्ति बतलाते हैं............(अकाल आदि कारणों से) यह लोग पंजाब में चले आये और खेती करने लगे। ये इतनी अच्छी खेती करते थे कि लोग इन्हें रसायनी (रसायनिक Chemist) कहने लगे। इसी से बिगड कर इनका सैनी (शुद्ध सैनिक) नाम पड गया।"

डाक्टर जे० एच० हटन, डी० एस-सी०, सी० आई० ई० मर्दुमशुमारी कमिश्नर गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया लिखते हैं :—

Letter No. 1 Enum. Dated '29th January, 1931 from Dr. J. H. Hunton, D. S. c., C. I. E., Census Commissioner, Government of India, says :—

With reference to your No. 3987/G dated the 20th Januaryd 1931 I have the bonour to say that I do not at present see any objection to the use of the terms "SAINIK RAJPUT" for designating your community in India Generelly, even if variant teruos are used in different States."

"आपकी जाति को आम तौर पर हिन्दुस्थान में सैनिक राजपूत नाम से पुकारने और लिखने में मुझे कोई एतराज नहीं है। हालां कि भिन्न भिन्न रियासतों में भिन्न भिन्न नामों का व्यवहार हो रहा है।"

राजपूताना और अजमेर-मेरवाड़ा की मर्दुमशुमारी का सुपरिंटेन्डेन्ट अपने हुक्म नम्बर ७८३ तारीख १२ फरवरी १६३१ को लिखता है कि—

"हिन्दुस्तान के मर्दुमशुमारी कमिश्नर देहली ने यह निश्चय किया है कि जो माली अपने आपको "सैनिक क्षत्रिय" नाम से अपनी जाति लिखवाना चाहें उनको हिन्दुस्तान में इस नाम से दर्ज किया जावे। इनको सैनिक क्षत्रिय दर्ज किया जावे। (जो एक जुदा जाति है)।"

यही हुक्म श्री दरबार साहब के हुक्म से जोधपुर राज्य के "मारवाड़ गजट" ता० २१ फरवरी सन् १६३१ के पृष्ठ २८४ पर भी प्रकाशित किया गया।

मारवाड़ स्टेट की मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १६३१ ई० में इसी हुक्म के अनुसार इस जाति को "सैनिक क्षत्रिय नाम से दर्ज किया गया। देखो—तालिकाएं, भाग १ पृष्ठ १५२ और १७१—यह याद रहे कि मर्दुमशुमारी के महकमे ही को भारत में एकमात्र अधिकार था कि किस जाति को क्या लिखा जावे।

हुक्म चीफ मिनिस्टर गवर्नमेंट आफ जोधपुर (सर डोनेल्ड फील्ड के० टी०, सी० आई०, ई० लेफ्टिनेन्ट करनल) ता० ३ जनवरी १६३७ (नकल चिट्ठी नं० २२४० ता० ६-२-१६३७ पी० डब्ल्यू० मिनिस्टर का इस प्रकार है :—

ORDER

Jodhpur, the 6th Februry, 1937.

No. 2240

Subject.—Recording of Malis as "Sainik Kshatriyas" in Pattas and Devalopment Department records.

Reference.-P. W. Minister's No. 431 Dated 22nd October, 1936.

His Highness has stated his personal view that he has no objection to Malis being recorded as "Sainik Kshatriyas" in the Pattas or the Development records.

हुक्म

नं० २२४० महकमा खास, जोधपुर

ता० ६ फरवरी १९३७ ई०

श्री महाराज साहिब बहादुर (हिजहाईनेस) ने अपना निज विचार प्रकट करते हुए यह फरमाया है कि मालियों को पट्टों में या डेवलोपमेंट के कागजात (रेकार्ड) में "सैनिक क्षत्रिय" दर्ज किये जाने में कोई एतराज नहीं है। फकत ता० २३ जनवरी सन् १९३७ ई०

Mehkmakhas. D. M. FEILD. LT. Col., C. I. E.
Jodhpur. Chief Minister.
Jauuary 23. 1937. Government of Jodhpur

उपसंहार

उपरोक्त वृत्तांत से यह निर्विवाद सिद्ध है कि "सैनिक राजपूत" (अथवा सैनिक क्षत्रिय) जो पहले मारवाड़ में "राजपूत माली", नाम से कहलाते थे, वे राजपूत वंश से निकले हुये हैं और वे असली नस्ल क्षत्रिय खून से उत्पन्न हुये हैं। वास्तव में यह थोक राजपूत समाज का ही एक अंग है और रजवीर्य से विशुद्ध राजपूत ही है। परन्तु महज समय की गति से व विदेशी साम्राज्यवादियों की क्षत्रिय समाज को विभाजित व कमजोर करने की कूट नीति के फलस्वरूप ही हम एक दूसरे को अलग समझने लग गये थे जो एक केवल भ्रम ही था। अतः "सैनिक क्षत्रियों"

को हर तरह से राजपूत ही समझा जावे और उस माफिक उनके साथ व्यवहार रखा जावे। यहां हम नवकोटि मारवाड़ के धणी स्वर्गवासी जोधपुर नरेश हिज हाईनेस राजराजेश्वर महाराजाधिराज राठौड़-कुल-दिवाकर ऐयर मार्सल लेफ्टिनेन्ट जनरल महाराजा सर उम्मेदसिंहजी साहब बहादुर (सं० १९७५–२००४ वि०) जी० सी० एस० आई; एल० एल० डी० (इत्यादि) को स्मरण किये बिना नहीं रह सकते। जिनकी प्रेरणा व सदेच्छा इस भेद भाव को मिटाने में रही और उन्होंने इस ओर काफी प्रयत्न भी किया। वर्तमान जोधपुर नरेश हिज हाईनेस महाराजा श्री हनुवन्तसिंहजी साहब बहादुर ने भी "रावत (मेर) राजपूतों" और मराठा क्षत्रियों को भी राजपूत समाज में सम्मिलित कर उस सद् प्रयत्न को जारी रक्खा। अस्तु।

अब हमारे इन "सैनिक राजपूत" भाईयों को भी चाहिये कि वे अपने आपको पूर्ववत विशुद्ध राजपूत ही समझें व करें और क्षत्रिय समाज को मजबूत करने में व उसके द्वारा राष्ट्र-देश की सेवा करने में अपना पूरा योग देवें। उनकी राजपूत जाति के साथ एकता को प्रमाणित करने के कई ऐतिहासिक और दूसरे साधन हैं परन्तु इन प्रमाणों में सबसे प्रबल अकाट्य और पू[illegible] साधन है वह सरकारी रचित पुस्तक जिसका नाम है "मारवा[illegible] स्टेट की जातियों और उपजातियों का इतिहास"। यह स[illegible] १८९१ ई० की मर्दुमशुमारी के वक्त जोधपुर स्टेट द्वारा प्रकाशि[illegible] की गई थी। सन् १८९१ ई० की प्रथम मर्दुमशुमारी का य[illegible]

परिशिष्ट भाग था। यह न केवल मारवाड़ में बल्कि राजपूताने में प्रथम मदुर्मशुमारी का अपने ढंग का एक ही प्रकाशन था। जोधपुर रियासत नेराय बहादुर मुन्शी हरदयालसिंह को जो उस समय नायब मुसाहिब आला (डिपुटी प्राईम मिनिस्टर) थे यह बड़ा कार्य सौंपा गया था कि मारवाड़ में बसने वाली हिन्दू मुसलमान समस्त जातियों और उपजातियों (लगभग दो सौ) की उत्पत्ति और उनका जरूरी जरूरी हालात व इतिहास के विषय में एक प्रमाणिकग्रन्थ लिखें। इस पूरी जांच और खोज के फलस्वरूप यह ग्रंथ रचा गया था। नायब मुसाहिब आला के सहायक इस कार्य में थे सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कायस्थ-कुल-भूषण मुंशी देवी प्रसादजी मुन्सिफ जो कि मारवाड़ के इतिहासज्ञ और बड़े पुरातत्ववेत्ता थे। इस जाति के इतिहास और दर्जे की परताल करते समय पाठक को चाहिए कि इस ऐतिहासिक प्रसंग को टटोलें। इस जाति का संक्षिप्त इतिहास में इस रिपोर्ट के पृष्ठ ८३ पर दिया गया है। इस अध्याय का शीर्षक है "राजपूतमाली"। यद्यपि कुछ काल से इस जाति के लोग पूर्णतया पढ़े लिखे नहीं थे और न इस जाति के पास लिखा हुआ इतिहास ही था लेकिन फिर भी कुछ निष्पक्ष इतिहासज्ञ इस जाति के लोगों की निस्वार्थ सेवाओं की पूरी पूरी प्रशंसा करने से न चूके। इस जाति के लोग उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर रह कर राज्य की सेवा की हैं। इस जाति के करीब एक लाख मजबूत और तन्दुरुस्त, महनती जवान मारवाड़ में है। उन्हों ने मानसिक तरक्की और कला कौशल शिक्षा में भी बडा कदम

बढ़ाया है। खेतीबाड़ी में ये मेहनती और चतुर हैं और व्यापार, ठेके के कार्यों तथा दूसरे धन्दों में भी इनकी योग्यता और काम बढ़े चढ़े हैं। चूंकि वर्तमान में तलवार की अपेक्षा क़लम की अधिक ताकत है, इसलिए इन लोगों ने सर्वत्र समयोचित मार्ग निर्धारित कर अपना और अपने देश का मस्तक ऊंचा करने और अपने असली वंश के अनुरूप वर्ताव करने का प्रयत्न किया है।

मैंने यह संक्षिप्त विवरण इसलिए पाठकों के सामने रखा है ताकि हमारे राजपूत समाज को भली प्रकार मालूम हो जावे कि "सैनिक क्षत्रिय", जाति का भी इतिहास और वंश परम्परा है। इति। ता० १४-१०-१९५१ ई० रविवार।

—बचनसिंह